सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

नाम	सूर्यकान्त त्रिपाठी
जन्मतिथि	11 फरवरी 1896
जन्म स्थान	मेदनीपुर
मृत्यु	15 अक्टूबर 1961
मृत्यु स्थान	इलाहाबाद
पिता का नाम	रामसहाय तिवारी
पत्नी का नाम	मनोहरा देवी

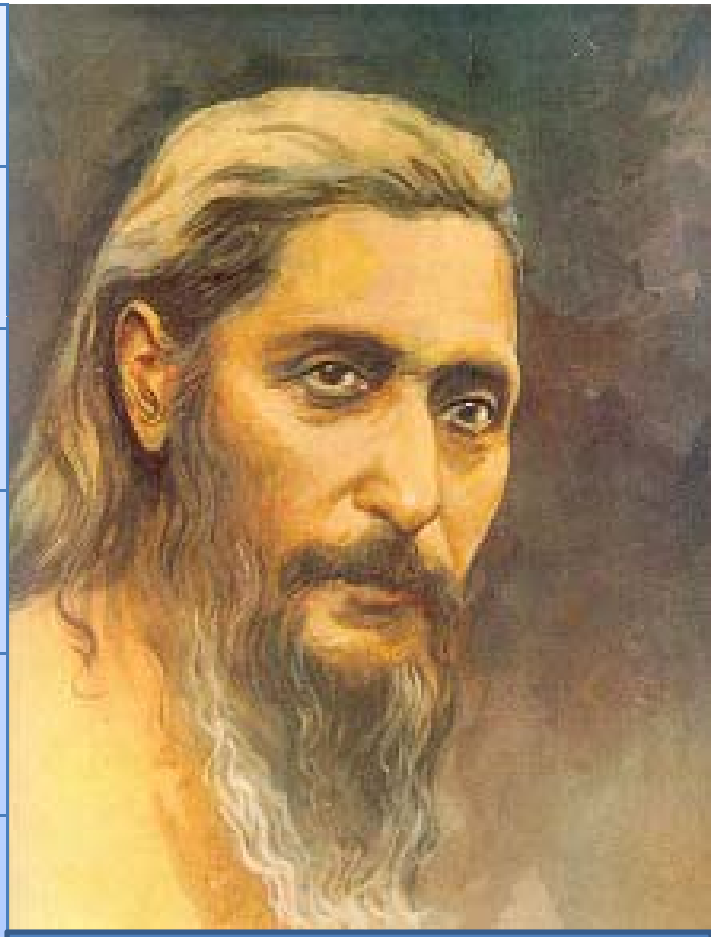

निराला

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

कविता संग्रह- परिमल, अनामिका, गीतिका, कुकुरमुत्ता, आदिमा, बेला, नये पत्त्ते, तुलसीदास, जन्मभूमि।
उपन्यास- अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरूपमा, चमेली, काले कारनामे।
निबन्ध संग्रह- प्रबन्ध-परिचय, प्रबन्ध प्रतिभा, प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संघर्ष।
अनुवाद- आनन्द मठ, विश्व-विकर्ष, कृष्ण कान्त का विल, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राज रानी

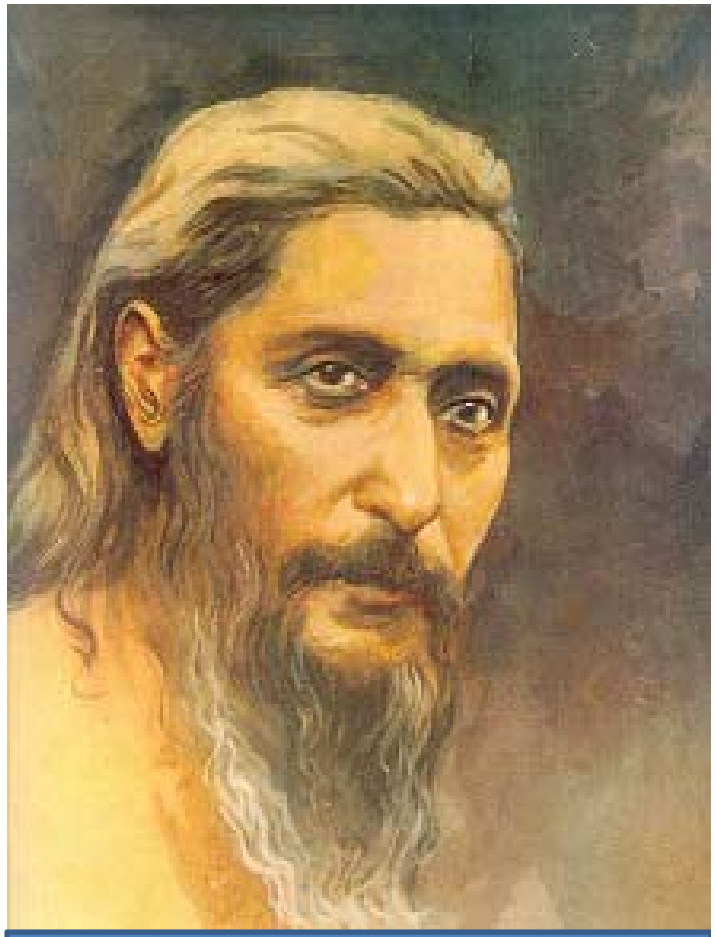

निराला

जुही की कली-

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न-
अमल-कोमल-तनु-तरुणी-जूही की कली,
दृग बन्द किये, शिथिल-पत्रांक में।
वासन्ती निशा थी;
विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
आई याद बिछुड़ने से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
आई याद कान्ता की कम्पित कमनीय गात,
फिर क्या? पवन

फिर क्या? पवन
उपवन-सर-सरित गहन-गिरि-कानन
कुञ्ज-लता-पुंजों को पारकर
पहुँचा जहां उसने की केलि
कलीं-खिली-साथ।
सोती थी,
जाने कहो कैसे प्रिय-आगमन वह?
नायक ने चूमे कपोल,
बोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।
इस पर भी जागी नहीं,
चूक-क्षमा मांगी नहीं,
निद्रालस बंकिम विशाल नेत्र मूंदे रही-
किम्वा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिये
कौन कहे?

निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की,
कि झोंकों की झड़ियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपोल गोल,
चौंक पड़ी युवति-
चकित चितवन निज चारों ओर पेर,
हेर प्यारे की सेज-पास,
नम्रमुख हंसी-खिली
खेल रंग, प्यारे संग।

जुही की कली

- विजन-वन-वल्लरी
  पर
  सोती थी सुहागभरी-
  स्नेह-स्वप्न-मग्न-
  अमल-कोमल-तनु-
  तरुणी-जूही की
  कली,
  दृग बन्द किये,
  शिथिल-पत्रांक में।

जुही की कली

- -जूही की कली,
  दृग बन्द किये, शिथिल पत्रांक में।

जुही की कली

वासन्ती निशा थी;
विरह-विधुर-प्रिया-
संग छोड़
किसी दूर देश में
था पवन
जिसे कहते हैं
मलयानिल।

जुही की कली

आई याद बिछड़ने से
मिलन की वह मधुर
बात,

आई याद चाँदनी की
धुली हुई आधी रात,

आई याद कान्ता की
कम्पित कमनीय गात,

फिर क्या? पवन

जुही की कली

उपवन-सर-सरित
गहन-गिरि-कानन
कुञ्ज-लता-पुंजों को पारकर
पहुँचा जहां उसने की केलि
कली-खिली-साथ।

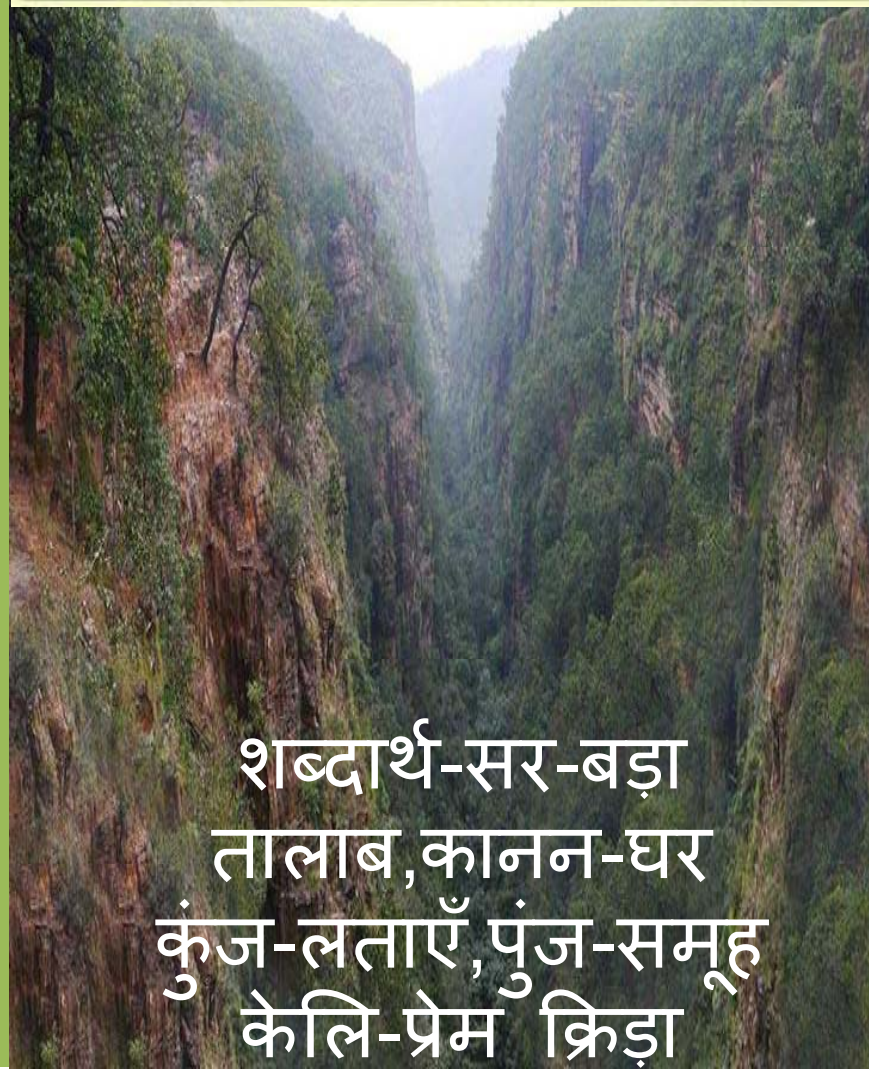

शब्दार्थ-सर-बड़ा तालाब,कानन-घर
कुंज-लताएँ,पुंज-समूह
केलि-प्रेम क्रिड़ा

जुही की कली

सोती थी,

जाने कहो कैसे प्रिय-
आगमन वह?

नायक ने चूमे कपोल,

बोल उठी वल्लरी की
लड़ी जैसे हिंडोल।

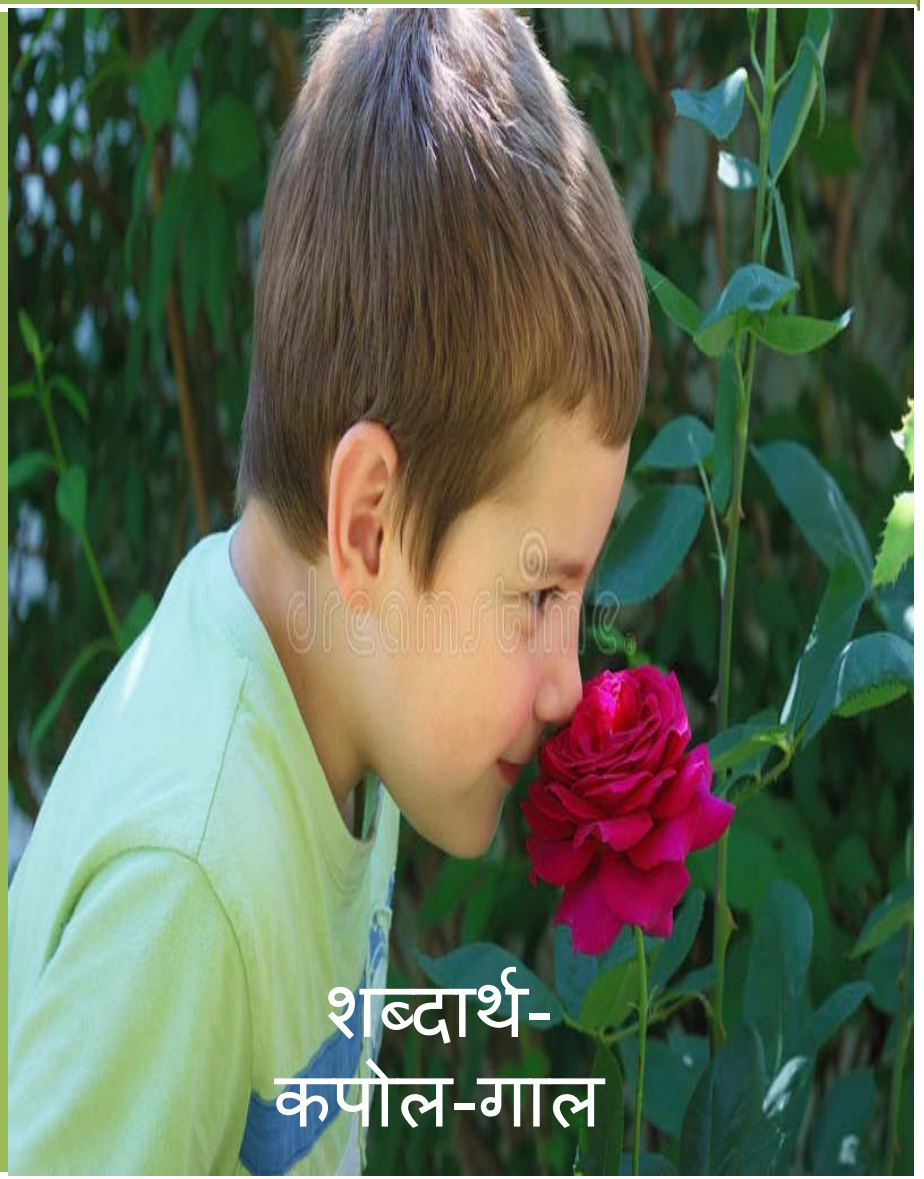

जुही की कली

इस पर भी जागी
नहीं,
चूक-क्षमा मांगी नहीं,
निंद्रालस बंकिम
विशाल नेत्र मूंदे रही-
किम्वा मतवाली थी
यौवन की मदिरा पिये
कौन कहे?

जुही की कली

निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की,
कि झोंकों की झड़ियों
से
सुन्दर सुकुमार देह
सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपोल
गोल,

जुही की कली

चौंक पड़ी युवति-

चकित चितवन निज चारों ओर फेर,

हेर प्यारे की सेज पास,

नम्रमुख हंसी, खिली

खेल रंग प्यारे संग।